

# पोर्टर श्रमिका

## भगतसिंह की बात सुनो!

नौजवान भारत सभा  
बिगुल मज़दूर दरता  
स्त्री मज़दूर संगठन

# शादी के इतने साल बाद



क्यों बाट-बाट  
याद आते हैं  
भगवान्सिंह?

# एक ओट

20 करोड़ बेघर,

20 करोड़ झुग्गीवासी

30 करोड़ बेरोज़गार

85 करोड़ योज़ 20 रूपये पर जीने वाले

# दूसरी ओट

एक लाख से

ज़्यादा अरबपति

TOP 10  
Richest  
INDIANS



# गृहिणों के आँखों के महालागर में

# अमीरों की ऐपारियों के टापू

**लोगों को आपस में बाँटने  
के लिए कराये गये**

**धार्मिक-जातीय-दर्जीय  
मण्ड़ो-दंगों की  
आग में झुलसता देश...**



क्या यही है  
शहीदों के सपनों का

## आज़ाद भारत?

शायद इसीलिए  
भगतसिंह ने कहा था:

अंग्रेज़ों की जड़े हिल गयी हैं  
और 15 साल में वे यहाँ से चले जायेंगे!!

बाद में काफी अफरा-तफरी होगी और  
तब लोगों को मेरी धार्द आयेगी...

(आखिरी मुलाकात में कहे गये शब्द)

**23 साल में फॉसी का फन्दा चूमने  
वाला वह नौजवान एक दूरदृशी  
विचारक भी था!**

**उसने पहले ही**  
**चेतावनी दी थी**

**कि कांग्रेस का आन्दोलन किसी न  
किसी समझौते या पूर्ण असफलता  
में समाप्त होगा...**

// भारत सरकार का प्रमुख लॉर्ड रीडिंग की जगह  
यदि सर पुरुषोत्तम दास ठकुर दास हो तो जनता  
को इससे क्या फर्क पड़ता है? एक किसान को इससे  
क्या फर्क पड़ेगा, यदि लॉर्ड इरविन की जगह सर  
तेज बहादुर सप्रू आ जायें। भारत में हम भारतीय  
श्रमिक के शासन से कम कुछ नहीं चाहते। हम गोरी  
बुराई की जगह काली बुराई को लाकर कष्ट नहीं  
उठाना चाहते।

— क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा

असहयोग आन्दोलन अचानक वापस लिये जाने से देश के नौजवानों में फैली निराशा और क्षोभ के बीच से एक नये क्रान्तिकारी संगठन – हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का उभार हुआ।

1 जनवरी 1925 की रात को पूरे उत्तर भारत में संगठन का पर्व ‘दि रिवोल्यूशनरी’ बाँटा गया।

## दि रिवोल्यूशनरी

हर इन्सान को निःशुल्क  
न्याय चाहे वह  
ऊँच हो या नीच  
अमीर हो या ग़रीब

हरेक इन्सान को वास्तविक  
समान अवसर, चाहे वह  
ऊँच हो या नीच  
अमीर हो ग़रीब

रिवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ़ इण्डिया का मुख्यपत्र

पहली जनवरी, 1925

भाग 1

(हर एक ईमानदार हिन्दुस्तानी को इसे पूरा पढ़ना चाहिए और  
अपने दोस्तों के बीच बाँटना चाहिए)

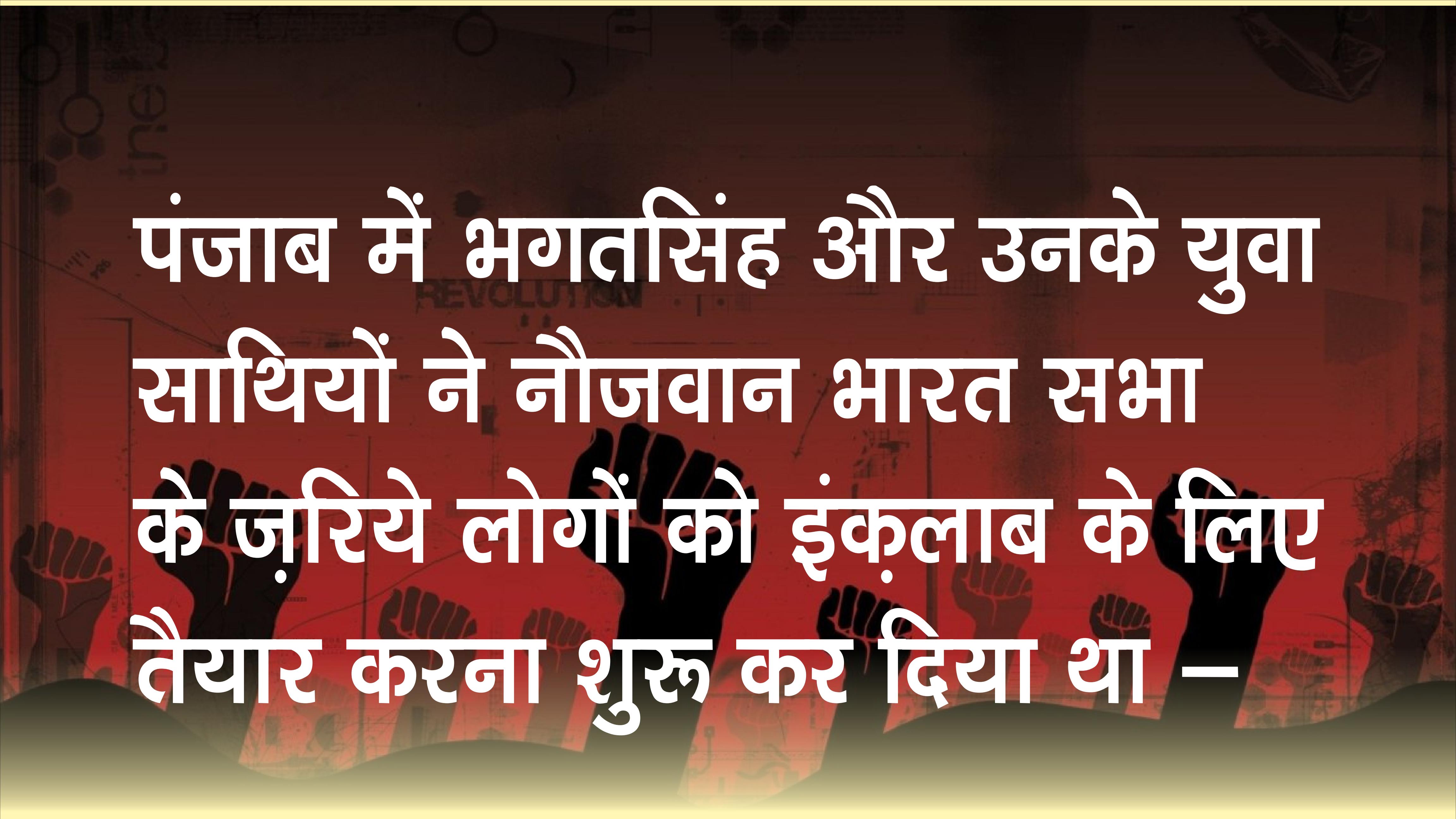
## भारतीय क्रान्तिकारी पार्टी का घोषणापत्र

“नये तारे के जन्म के लिए उथल-पुथल ज़रूरी है।” और जीवन पीड़ा और व्यथा के साथ जन्म लेता है। हिन्दुस्तान का भी एक नया जन्म हो रहा है और यह उस उथल-पुथल और पीड़ा के दौर से गुज़र रहा है जिससे बचा नहीं जा सकता है। हिन्दुस्तानी जन अपनी नियत भूमिका अदा करेंगे और तब सारे अनुमान बेकार सिद्ध होंगे, सीधे-सादे और कमज़ोर लोगों से होशियारों और ताकतवरों के हाथ-पैर फूल जायेंगे, विशाल साम्राज्य चकनाचूर हो जायेंगे और नये राष्ट्रों का उदय होगा जो अपनी शान और महिमा से मानवता को स्तब्ध कर देंगे।.....

.....राष्ट्र-निर्माण के लिए हज़ारों ऐसे गुमनाम स्त्री-पुरुषों के आत्मबलिदान की आवश्यकता पड़ती है जोकि अपने खुद के आराम या स्वार्थ अपने स्वयं के जीवन या अपने प्रियजनों के जीवन के मुक़ाबले अपने देश के विचार की अधिक परवाह करते हैं।

ह. वी.के.  
अध्यक्ष, केन्द्रीय परिषद  
भारत की क्रान्तिकारी पार्टी

1925 एच.आर.ए. का घोषणापत्र



पंजाब में भगतसिंह और उनके युवा साथियों ने नौजवान भारत सभा के ज़रिये लोगों को इंक़लाब के लिए तैयार करना शुरू कर दिया था –

“देश को तैयार करने के भावी कार्यक्रम का शुभारम्भ इस आदर्श वाक्य से होगा –  
“क्रान्ति जनता द्वारा, जनता के हित में।”...हमारे हज़ारों मेधावी नौजवानों को अपना बहुमूल्य जीवन गाँवों में बिताना पड़ेगा और लोगों को समझाना पड़ेगा... कि आनेवाली क्रान्ति का मतलब केवल मालिकों की तब्दीली नहीं होगा। उसका अर्थ होगा नयी व्यवस्था का जन्म – एक नयी राजसत्ता।”

( नौजवान भारत सभा, लाहौर का घोषणापत्र से )

**क्रान्तिकारी आनंदोलन में एक नया मुकाम**

**8-9 सितम्बर 1928  
फिरोज़शाह कोटला, दिल्ली  
के खण्डहरों में**



**क्रान्तिकारियों की एक अहम बैठक में**

**भगतसिंह के प्रस्ताव पर  
पार्टी का नया नाम रखा गया**

**हिन्दुस्तान सोशलिस्ट  
रिपब्लिकन एसोसिएशन**

**(हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संघ)**

# हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन ने अपने घोषणापत्र में स्पष्ट कहा :

भारतीय पूँजीपति भारतीय लोगों को धोखा देकर विदेशी पूँजीपति से विश्वासघात की कीमत के रूप में सरकार में कुछ हिस्सा प्राप्त करना चाहते हैं। इसी कारण मेहनतकश की तमाम आशाएँ अब सिर्फ़ समाजवाद पर टिकी हैं और सिर्फ़ यही पूर्ण स्वराज्य और सब भेदभाव ख़त्म करने में सहायक साबित हो सकता है। देश का भविष्य नौजवानों के सहारे है। वही धरती के बेटे हैं।



# बहरों को सुनाने के लिए

# धर्माकांड

8 अप्रैल, 1929

## जनविरोधी कानूनों के खिलाफ़ असेम्बली में बम फेंका गया

### हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातान्त्रिक सेना

नोटिस

“बहरों को सुनाने के लिए धमाके की ज़रूरत होती है”  
प्रसिद्ध फ़्रांसीसी अराजकतावादी शहीद वैलियाँ के ये अमर शब्द हमारे काम के औचित्य के साक्षी हैं।

पिछले दस वर्षों में ब्रिटिश सरकार ने शासन-सुधार के नाम पर इस देश का जो अपमान किया है उसकी कहानी दोहराने की आवश्यकता नहीं और न ही हिन्दुस्तानी पार्लियामेण्ट पुकारी जाने वाली इस सभा ने भारतीय राष्ट्र के सिर पर पत्थर फेंकर उसका जो अपमान किया है, उसके उदाहरणों को याद दिलाने की आवश्यकता है। यह सब सर्वाविदित और स्पष्ट है। आज फिर जब लोग ‘साइमन कमीशन’ से कुछ सुधारों के टुकड़ों की आशा में आँखें फैलाये हैं और इन टुकड़ों के लोभ में आपस में झगड़ रहे हैं, विदेशी सरकार ‘पल्लिक सेप्टी बिल’ और ‘ट्रेडस डिस्प्यूट्स बिल’ के रूप में अपने दमन को और भी कड़ कर लेने का यत्न कर रही है। इसके साथ ही आज वाले अधिवेशन में ‘प्रेस सैडिशन एक्ट’ जनता पर कहाने की भी धमकी दी जा रही है। सार्वजनिक काम करने वाले मज़दूर नेताओं की अन्धाधुन्ध गिरफ्तारियाँ यह स्पष्ट कर देती हैं कि सरकार किस रवैये पर चल रही है।

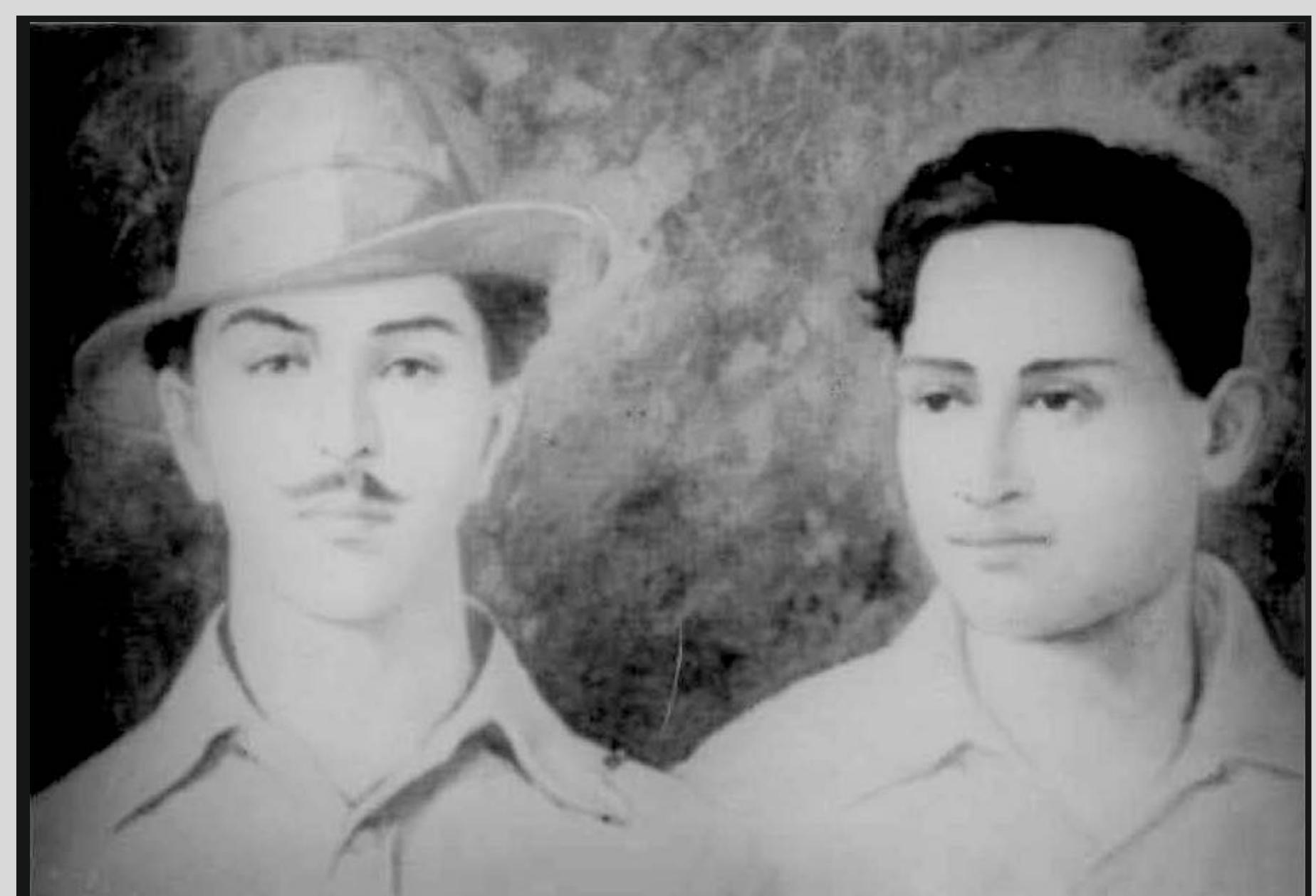
राष्ट्रीय दमन और अपमान की इस उत्तेजनापूर्ण परिस्थिति में अपने उत्तरदायित्व की गम्भीरता को महसूस कर ‘हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र संघ’ ने अपनी सेना को यह क़दम उठाने की आज्ञा दी है। इस कार्य का प्रयोजन है कि कानून का यह अपमानजनक प्रहसन समाप्त कर दिया जाये। विदेशी शोषक नौकरशाही जो चाहे करे परन्तु उसकी वैधानिकता की नकाब फाड़ देना आवश्यक है।

जनता के प्रतिनिधियों से हमारा आग्रह है कि वे इस पार्लियामेण्ट के पाखण्ड को छोड़ कर अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों को लौट जायें और जनता को विदेशी दमन और शोषण के विरुद्ध क्रान्ति के लिए तैयार करें। हम विदेशी सरकार को यह बतला देना चाहते हैं कि हम ‘सार्वजनिक सुरक्षा’ और ‘आंदोलिक विवाद’ के दमनकारी कानूनों और लाला लाजपत राय की हत्या के विरोध में देश की जनता की ओर से यह क़दम उठा रहे हैं।

हम मनुष्य के जीवन को पवित्र समझते हैं। हम ऐसे उच्चल भविष्य में विश्वास रखते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को पूर्ण शान्ति और स्वतन्त्रता का अवसर मिल सके। हम इन्सान का खून बहाने की अपनी विवशता पर दुखी हैं। परन्तु क्रान्ति द्वारा सबको समान स्वतन्त्रता देने और मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त कर देने के लिए क्रान्ति में कुछ न कुछ रक्तपात अनिवार्य है।

इन्क़लाब ज़िन्दाबाद!

ह. बलराज  
कमाण्डर इन चौफ़



भगतसिंह और  
बटुकेश्वर दत्त द्वारा  
असेम्बली में फेंका गया  
‘लाल पर्चा’

इन बमों के धमाके ने ब्रिटिश साम्राज्य की चूलें हिला दीं। ये बम ‘सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक’ और ‘औद्योगिक विवाद विधेयक’ के विरोध में फेंके गये थे। इन कानूनों का मक्सद था जनता पर दमन का शिकंजा और कसना।

(आज़ाद भारत के नये शासक गोरों के इन कानूनों से भी ज़्यादा ख़तरनाक काले कानून बना चुके हैं)



**जेल में भी क्रान्तिकारियों का संघर्ष जारी रहा!**

# राजनीतिक अधिकारों के लिए भगतसिंह की अगुवाई में चली ऐतिहासिक भूख हड़ताल



यतीन्द्रनाथ दास

भूख हड़ताल के 63वें दिन  
शहीद हो गये...

आजादी की असलियत का इससे बड़ा प्रमाण  
क्या हो सकता है कि जनता के हक़ में आवाज़  
उठाने के जुर्म में हज़ारों लोग आज देश की जेलों में  
कैद हैं और गोरी हुकूमत से भी ज़्यादा बर्बर जुल्मों  
का सामना कर रहे हैं...



**क्रान्तिकारियों ने अदालत को भी  
विचारों के प्रचार का मंच बना दिया**

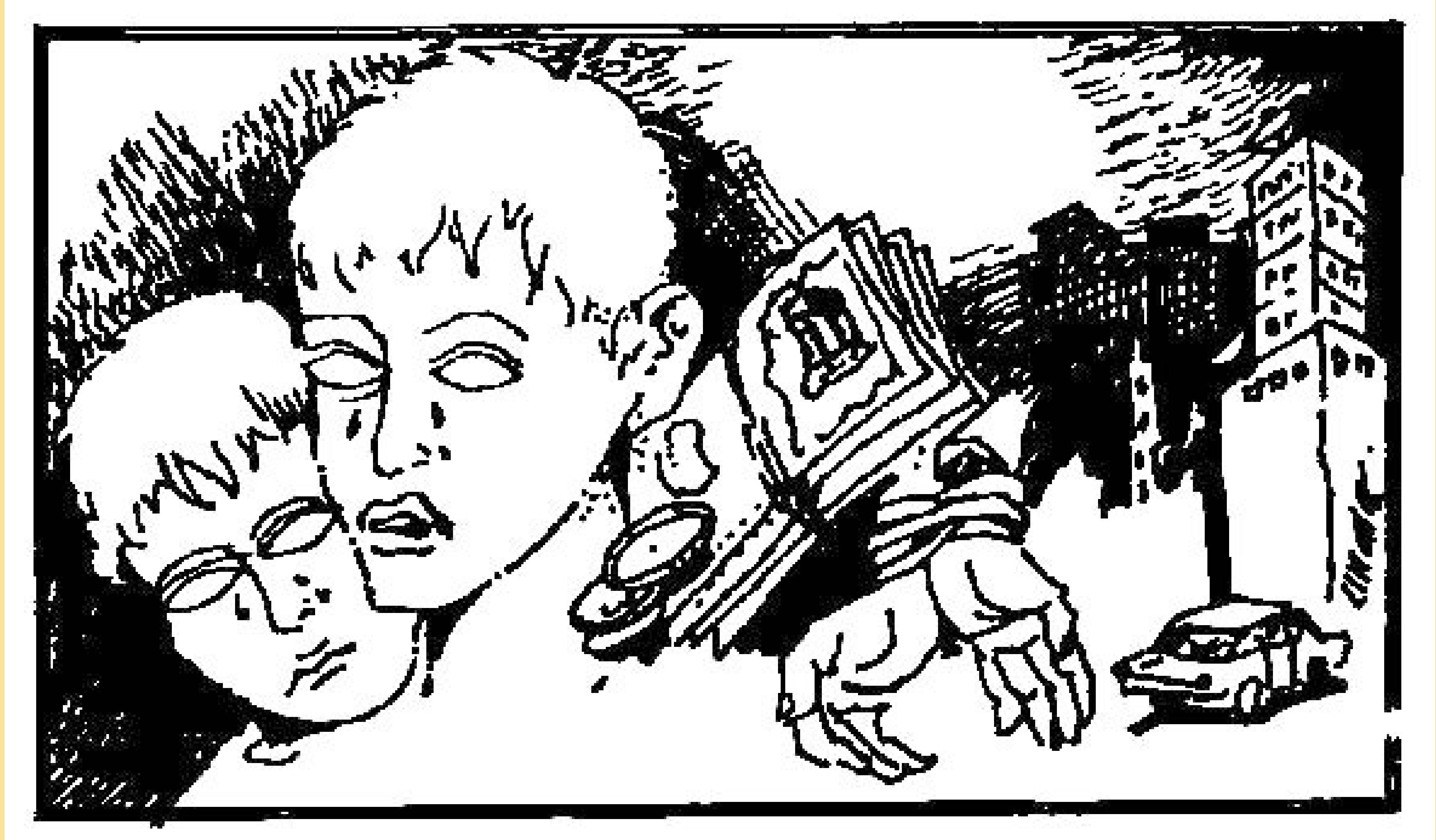
उनके बयान अखबारों के ज़रिये  
लोगों तक पहुँचने लगे



**देखते ही देखते**

**समाजवाद का उनका लक्ष्य**

**व्यापक जनता में लोकप्रिय हो गया...**



आज मजदूरों को उनके प्राथमिक अधिकार से वंचित रखा जा रहा है और उनकी गाढ़ी कमाई का सारा धन शोषक पूँजीपति हड्प जाते हैं। दूसरों के अन्नदाता किसान आज अपने परिवार सहित दाने-दाने के लिए मुहताज हैं। दुनिया भर के बाजारों को कपड़ा मुहैया करने वाला बुनकर अपने तथा अपने बच्चों के तन ढंकने-भर को भी कपड़ा नहीं पा रहा है। सुन्दर महलों का निर्माण करने वाले राजगीर, लोहार तथा बढ़ई स्वयं गन्दे बाड़ों में रहकर ही अपनी जीवन-लीला समाप्त कर जाते हैं। इसके विपरीत समाज के जोंक शोषक पूँजीपति ज़रा-ज़रा-सी बातों के लिए लाखों का वारा-न्यारा कर देते हैं। यह भयानक असमानता और जबर्दस्ती लादा गया भेदभाव दुनिया को एक बहुत बड़ी उथल-पुथल की ओर लिये जा रहा है।

(सेशन कोर्ट में भगतसिंह का बयान)



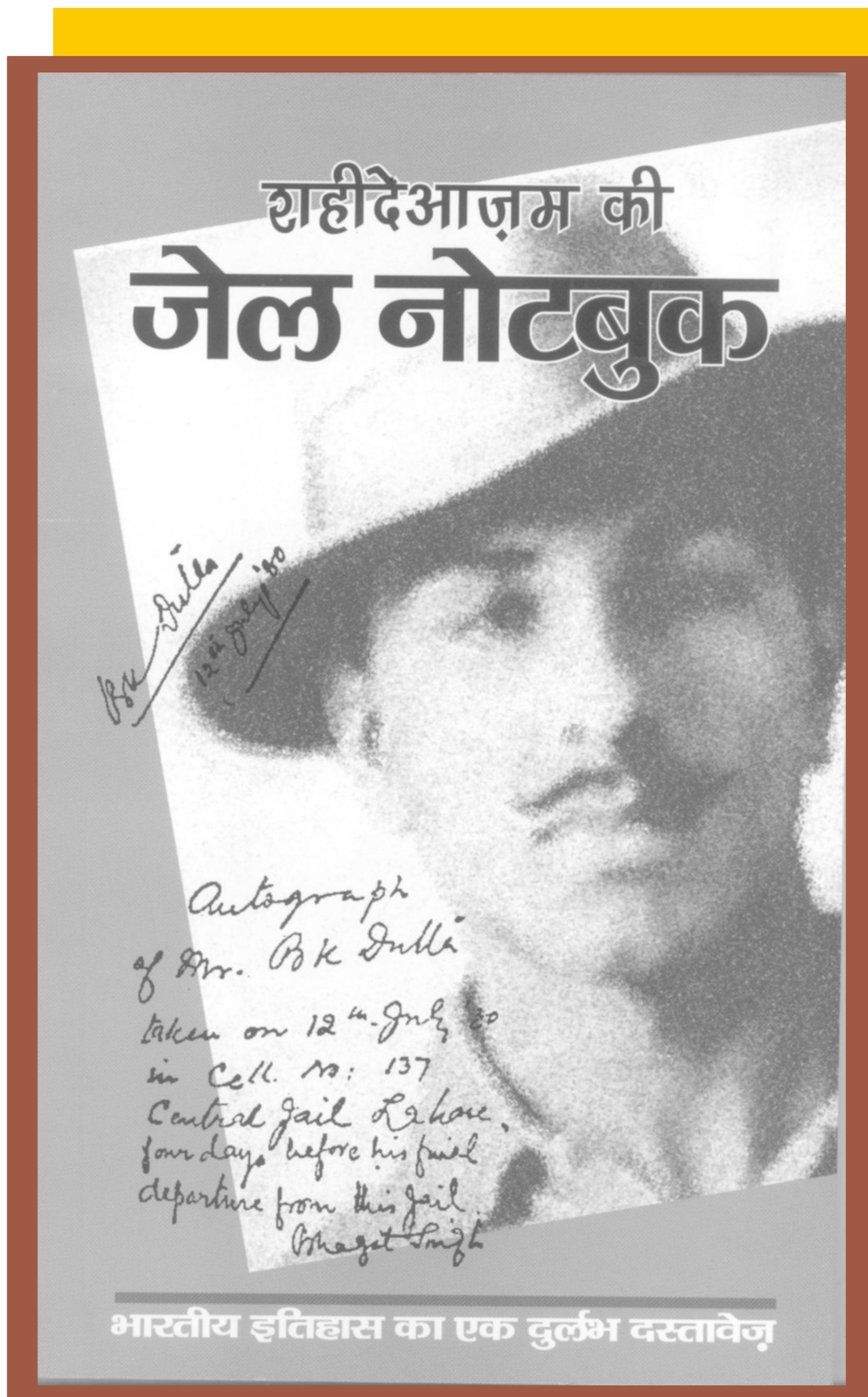
# यह युद्ध जारी रहेगा...

यह युद्ध तब तक चलता रहेगा, जब तक कि शक्तिशाली व्यक्ति भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार जमाये रखेंगे। चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज़ पूँजीपति, अंग्रेज़ शासक या पूरी तरह भारतीय ही हों। ...यह उस समय तक समाप्त नहीं होगा जब तक कि समाज का वर्तमान ढाँचा समाप्त नहीं हो जाता, प्रत्येक व्यवस्था में परिवर्तन या क्रान्ति नहीं हो जाती...

निकट भविष्य में यह युद्ध अन्तिम रूप में लड़ जायेगा...। साम्राज्यवाद एवं पूँजीवाद कुछ समय के मेहमान हैं। यही वह युद्ध है जिसमें हमने प्रत्यक्ष रूप में भाग लिया है। हम इसके लिए अपने पर गर्व करते हैं कि इस युद्ध को न तो हमने प्रारम्भ ही किया है, न यह हमारे जीवन के साथ समाप्त ही होगा।

- फाँसी से तीन दिन पूर्व भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव द्वारा फाँसी के बजाय गोली से उड़ाये जाने की माँग करते हुए पंजाब के गवर्नर को लिखे गये पत्र के अंश

# भगतसिंह के विचार देशी शासकों के लिए भी **खृत्यनाक थे!**



आज़ादी के बाद भी उन्हें  
दबाया जाता रहा...

भगतसिंह की जेल नोटबुक  
जो आज़ादी के 63 साल बाद  
छप सकी...

जेल में लिखी भगतसिंह की चार किताबें - 'आत्मकथा',  
'मृत्यु का द्वार', 'समाजवाद का आदर्श' और 'भारत का  
क्रान्तिकारी अन्दोलन' आज भी लापता हैं...

# मगर सखार्यों की हस्तन्द कोशिशों के बावजूद

शहीदों के सपने  
और उनके विचार  
लोगों के दिलो-दिमाग़ में  
जगह बना चुके हैं...

## जैसा भगतसिंह ने कहा था :

मेरी हवा में रहेंगी  
ख्यालों की बिजलियाँ  
ये मुश्ते खाक़ हैं फ़ानी  
रहे, रहे न रहे...

(मेरे विचारों की बिजलियाँ हवाओं में कौंधती रहेंगी  
ये शरीर मुट्ठीभर राख हैं, रहे न रहे...)

## विचार अमर होते हैं और दुनिया की कोई ताक़त उन्हें कुचल नहीं सकती।

(असेम्बली में बम विस्फोट के बाद भगतसिंह द्वारा फेंके पर्चे से )



# '47 की आज़ादी की असलियत भी जल्द ही लोगों के सामने उजागर होने लगी...

कौन आज़ाद हुआ  
किसके माथे से सियाही छूटी  
मेरी सीने में अभी दर्द है महकूमी का  
मादरे-हिन्द के चेहरे पे  
उदासी है वही...

(अली सरदार जाफ़री)

ये दाग़-दाग़ उजाला  
ये शबगुज़ीदा सहर  
ये वो सहर तो नहीं  
चले ये जिसकी आरजू लेकर

(फैज़ अहमद फैज़)

आज़ाद भारत  
के नये शासकों  
के रंग-ढंग  
देखकर कवि  
को कहना पड़  
गया...

भगतसिंह इस बार न लेना काया भारतवासी की,  
देशभक्ति के लिए आज भी सज़ा मिलेगी फाँसी की!

यदि जनता की बात करोगे तुम गद्दार कहाओगे  
बम्ब-सम्ब को छोड़ो भाषण दिया तो पकड़े जाओगे  
निकला है कानून नया चुटकी बजते बंध जाओगे  
न्याय अदालत की मत पूछो सीधे मुकित पाओगे  
कांग्रेस का हुक्म, जल्लरत क्या वारण्ट तलाशी की!  
देशभक्ति के लिए आज भी सज़ा मिलेगी फाँसी की!

(शंकर शैलेन्ड्र)

मेहनतकश की बढ़ती लुट



भूख और कृपोषण से मरते गये



दलितों-अंतिम सद्याको हमहिलाओं  
दिन-काल का देखते हुए अपनी पर  
का बर्बर उत्पीड़न

देशी-विदेशी पूँजीपतियों द्वारा  
प्राकृतिक संसाधनों की खुली डकैती

महानगरों में होते जगमग “विकास” का अँधेरा पहलू यह है कि देश में प्रतिदिन हज़ारों बच्चे भूख और कुपोषण से मरते हैं। हर तीसरे व्यक्ति, यानी 40 करोड़ लोगों को अक्सर भूखे सोना पड़ता है। बेरोज़गारों की संख्या 30 करोड़ तक पहुँच चुकी है। पूँजी की मार करोड़ों किसानों को उनकी जगह-ज़मीन से उजाड़कर दर-बदर कर रही है और लाखों को आत्महत्या के लिए विवश कर रही है। लम्बे संघर्ष से मिले सभी अधिकार मज़दूरों से छीन लिये गये हैं।



भारत में 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्युदर चीन के मुक़ाबले तीन गुना, श्रीलंका के मुक़ाबले छह गुना और यहाँ तक कि बांग्लादेश और नेपाल से भी ज़्यादा है। 63 फ़ीसदी बच्चे प्रायः भूखे पेट सोते हैं, 60 फ़ीसदी बच्चे कुपोषणग्रस्त हैं, 60 फ़ीसदी बच्चे (और 74 फ़ीसदी नवजात) ख़ून की कमी के शिकार हैं और 50 फ़ीसदी का वज़न न्यूनतम सीमा से कम है। 5 साल से कम आयु के 5 करोड़ भारतीय बच्चे गम्भीर कुपोषण के शिकार हैं। 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की मौत 50 फ़ीसदी मामलों में कुपोषण के कारण होती है। प्रतिदिन लगभग 9 हज़ार भारतीय बच्चे भूख, कुपोषण और कुपोषणजनित बीमारियों से मरते हैं। 23 फ़ीसदी बच्चे जन्म से कमज़ोर होते हैं और 1000 में से 60 एक वर्ष का होने से पहले मर जाते हैं।



# देश की 75 फ़ीसदी माँओं को पोषणरुक्त भोजन नहीं मिलता।



**प्रसव के दौरान 1 लाख में से 450 स्त्रियों की मौत हो जाती है।**  
**गर्भवती और सघःप्रसूता स्त्रियों के मामले में 99 फ़ीसदी मौतें गरीबी, भूख और बीमारी के चलते होती हैं।**

**60 फ़ीसदी प्रसव अभी भी घरों में कराये जाते हैं और 25 फ़ीसदी मामलों में प्रसव के पहले और बाद में कोई डॉक्टरी सुविधा प्राप्त नहीं होती।**

देश की 93 फ़ीसदी कामगार आबादी अनौपचारिक क्षेत्र में काम करती है। इन मज़दूरों को किसी भी किस्म की रोजगार सुरक्षा या सामाजिक सुरक्षा नहीं है। ये दिहाड़ी और ठेका पर काम करते हैं और रोज़ाना 10-12 घण्टे खटने पर भी मुश्किल से जीने लायक ही कमा पाते हैं। काम के घण्टे, ओवरटाइम, छुट्टी, मेडिकल, दुर्घटना होने पर मुआवज़ा आदि का कोई श्रम कानून इन मज़दूरों के लिए लागू नहीं होता। अब रहे-सहे श्रम कानूनों को भी ख़त्म किया जा रहा है।

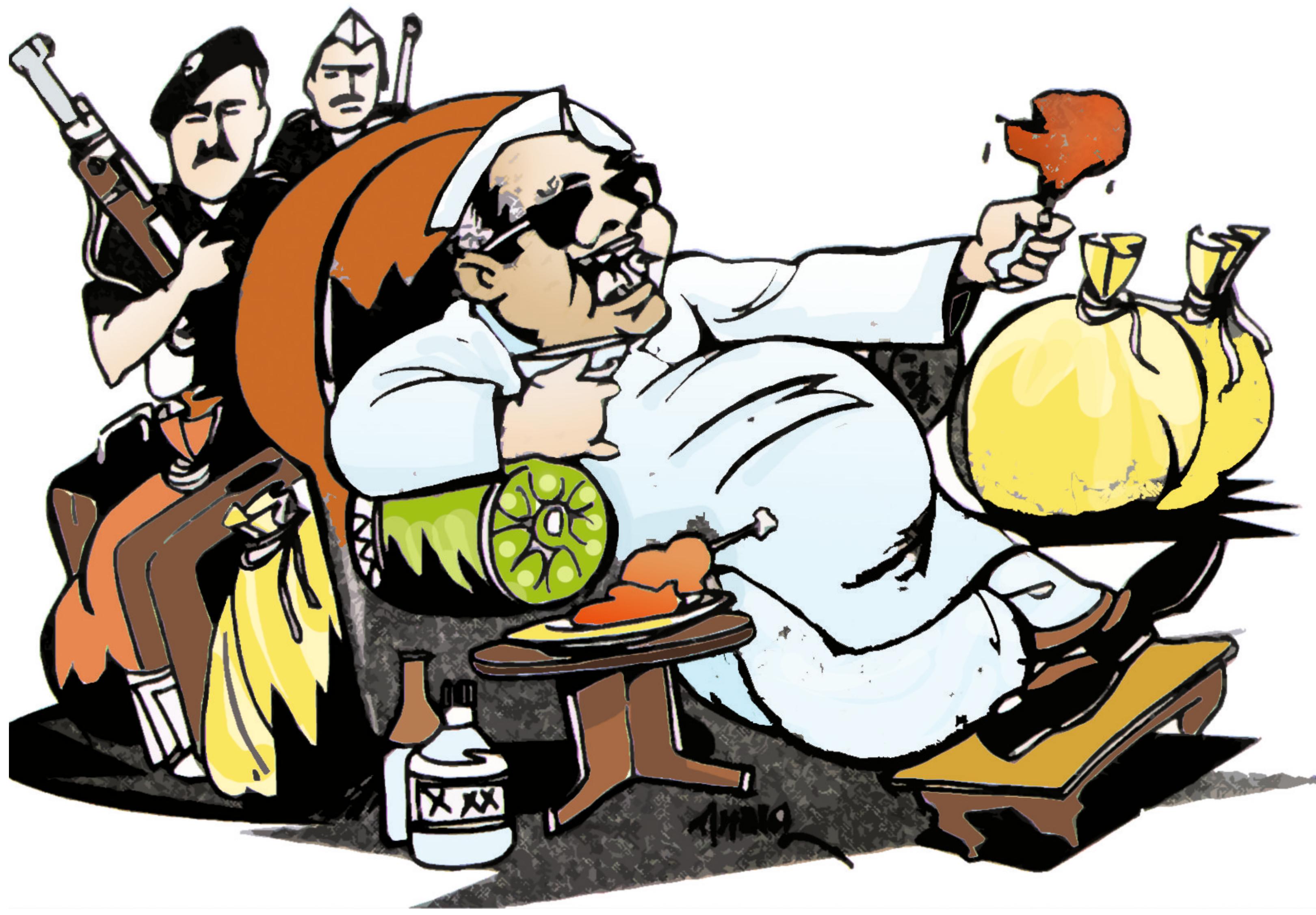




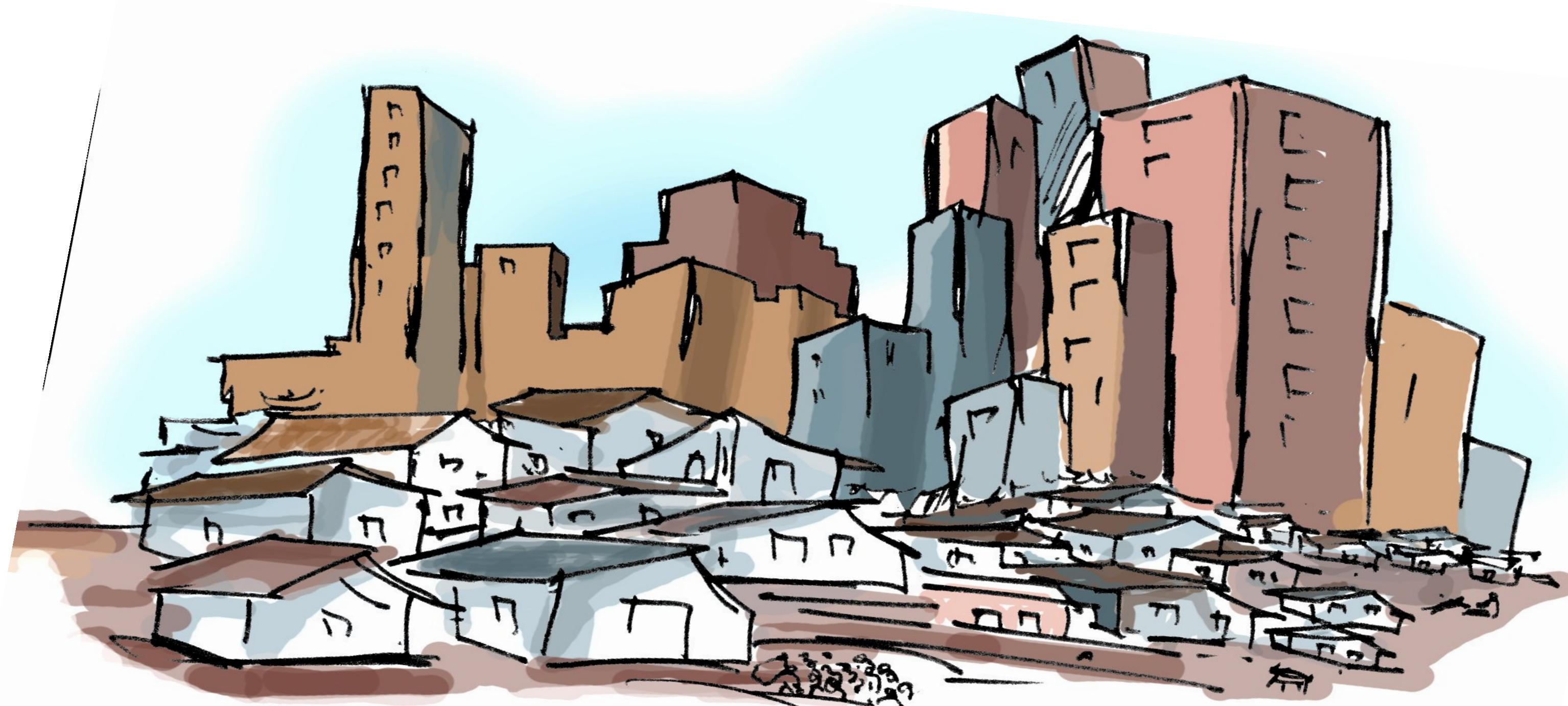
**विकास के नाम पर किसानों और आदिवासियों  
को उनकी जगह-ज़मीन से उजाड़कर ज़मीन,  
खदानें, नदियाँ तक देशी-विदेशी लुटेरी कम्पनियों  
को कौड़ियों के मोल दी जा रही हैं। इस नंगी लूट  
का विरोध करने वालों को कुचलने में राज्य  
और केन्द्र सरकारें अंग्रेज़ों को बहुत पीछे छोड़ चुकी हैं!**



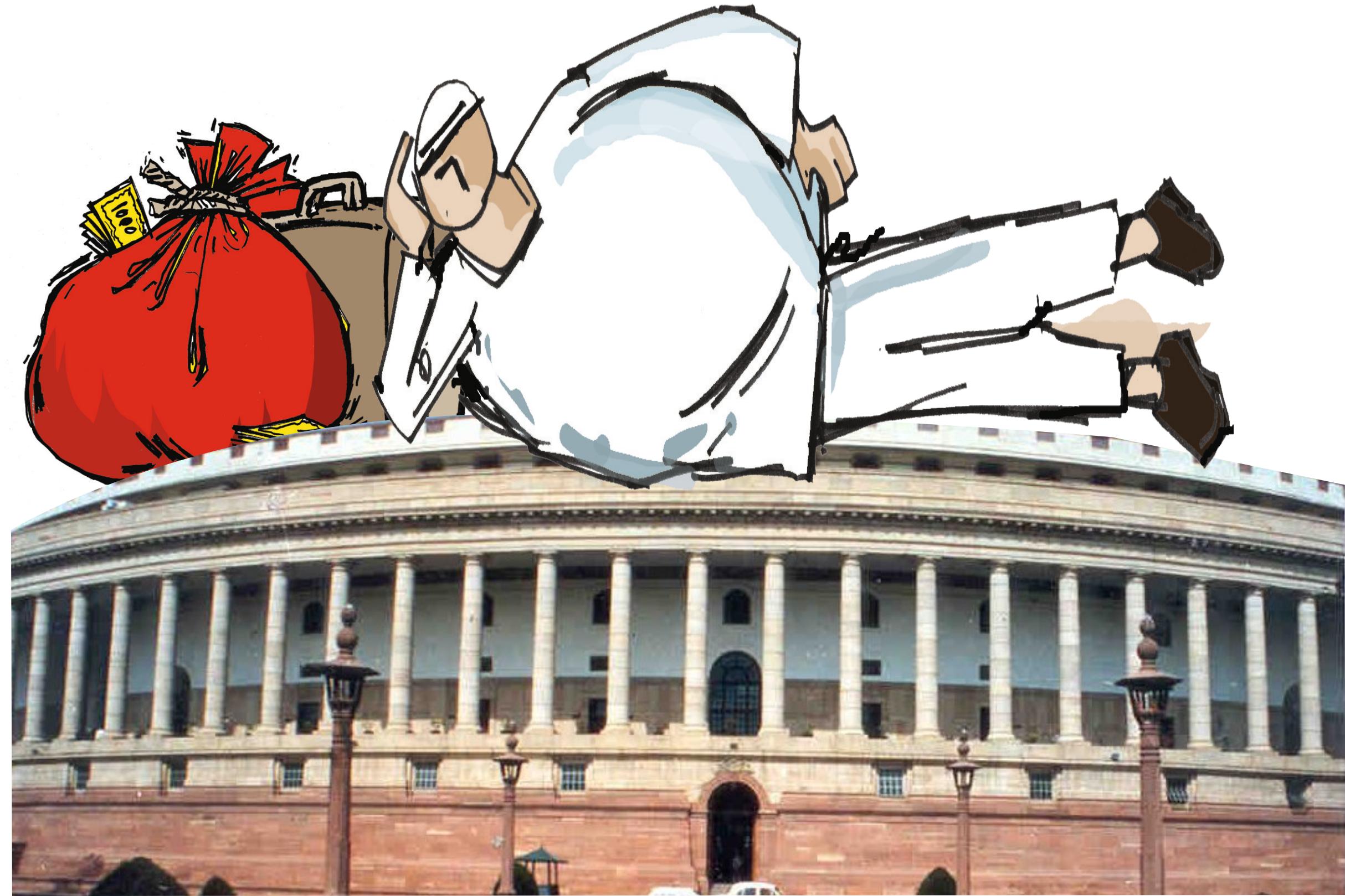
उदारीकरण के 25 वर्षों के दौरान लगभग 3 लाख किसान आत्महत्या कर चुके हैं, जिनमें ज़्यादातर छोटे किसान हैं। इन्हें उजाड़ने में पूँजीवादी बड़े फार्मरों, साहूकारों, बैंकों और एग्रीबिज़नेस कारपोरेशनों के अतिरिक्त पूँजीवादी नीतियों की मुख्य भूमिका है। सरकार किसानों की ज़मीन कौड़ियों के मोल अधिगृहीत करके पूँजीपतियों और बिल्डरों को बेचकर खुद दलाली खाकर उन्हें मुनाफ़ा कमाने का मौक़ा दे रही है।



अरबपतियों और करोड़पतियों की संख्या दुनिया में सबसे तेज़ी से भारत में बढ़ रही है। अरबपतियों की कुल दौलत के लिहाज़ से अमेरिका के बाद दूसरा स्थान भारत का है, लेकिन बेघरों, कुपोषितों, भूखों और अनपढ़ों की तादाद के लिहाज़ से भी वह दुनिया में पहले नम्बर पर है। चीन के बाद भारत अर्थव्यवस्था की विकास दर के हिसाब से दूसरे स्थान पर है, पर मानव विकास सूचकांक में भी यह दुनिया के सबसे ग़रीब देशों के साथ सबसे निचले पायदान पर खड़ा है।



# जनता की पीठ पर लदा 'जनतंत्र' का पहाड़



जिस देश में 40 करोड़ लोग भूखे सोते हों, आधी आबादी कुपोषित हो, और 80 करोड़ लोग अपनी बुनियादी ज़रूरतें पूरी न कर पाते हों, उस देश में कुल 543 संसद-सदस्यों पर सालाना 4 अरब रुपये ख़र्च होते हैं। संसद के सत्रों का प्रतिदिन का ख़र्च 3.6 करोड़ रुपये होता है। **लोकसभा के पिछले चुनाव पर करीब 40,000 करोड़ रुपये फूँक दिये गये!**





इस दैत्याकार और बेहद खर्चाले नेताशाही और नौकरशाही के तंत्र का 90 फ़ीसदी से भी अधिक बोझ वह ग़रीब जनता उठाती है जिसे जीने की बुनियादी ज़रूरतें तक नसीब नहीं होती। टैक्सों से कुल सरकारी आय का 90 प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा आम लोग परोक्ष करों के रूप में देते हैं। 10 प्रतिशत से भी कम हिस्सा पूँजीपतियों और अमीर वर्गों का होता है। उन टैक्सों का भी बड़ा हिस्सा वे देते ही नहीं। पूँजीपतियों को दिया बैंकों का खरबों रूपये का कर्ज़ हर वर्ष ढूँढ़ जाता है। कारख़ाने लगाने और खदानें खोदने के लिए उन्हें कौड़ियों के मोल ज़मीनें बेची जाती हैं और पट्टे पर दी जाती हैं। हर बजट में उन्हें लाखों करोड़ रूपये की छूटें दी जाती हैं।

इन थोड़े से तथ्यों से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि ‘दुनिया का सबसे बड़ा जनतन्त्र’ देश की जनता पर कितना भारी पड़ रहा है! सरकार आज खुले तौर पर ‘पूँजीपतियों की मैनेजिंग कमेटी’ बनी हुई है, संसद मण्ड़ बहसबाज़ी का अङ्गड़ा है,



नौकरशाही शासन और शोषण की नीतियाँ बनाती है और सेना-पुलिस हर विद्रोह को कुचल देने के लिए चाक-चौबन्द रहती है। **यह है भारतीय लोकतंत्र का असली चेहरा!**

|| कानून की पवित्रता तभी तक रखी जा सकती है जब तक वह जनता की भावनाओं को प्रकट करता है। जब यह शोषणकारी समूह के हाथों में एक पुज़ा बन जाता है तो अपनी पवित्रता और महत्व खो बैठता है। जैसे ही कानून सामाजिक ज़रूरतों को पूरा करना बन्द कर देता है वैसे ही जुल्म और अन्याय को बढ़ाने का हथियार बन जाता है।

- विशेष टिव्यूनल को पत्र  
भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु

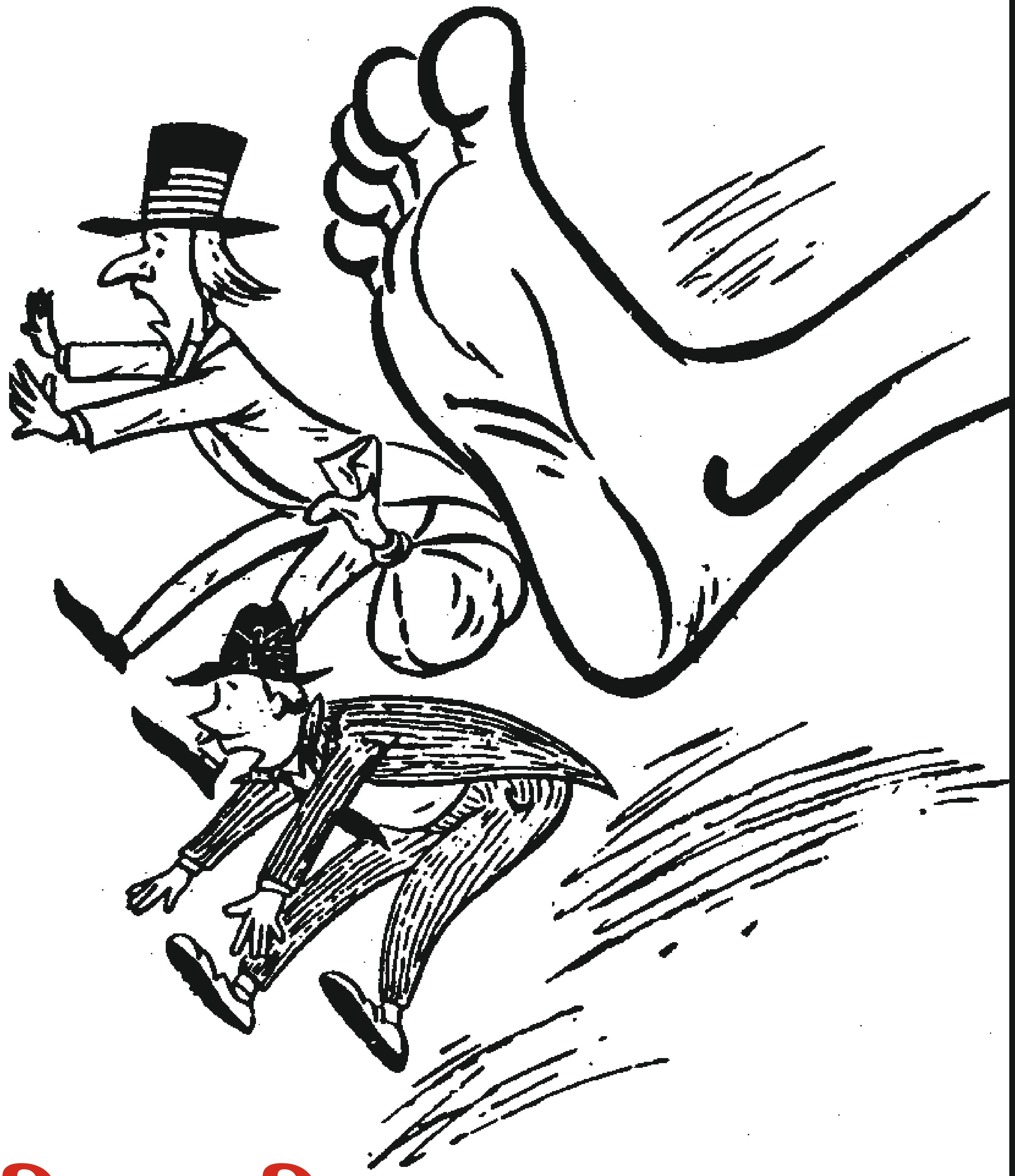


# याद कीजिये

## भगतसिंह ने क्या कहा था!

“अगर कोई सरकार जनता को उसके  
बुनियादी अधिकारों से वंचित रखती है  
तो जनता का यह अधिकार ही नहीं  
बल्कि आवश्यक कर्तव्य बन जाता है  
कि ऐसी सरकार को बदल दे  
या समाप्त कर दे! ”





**बरती-बरती अलख जगाकर  
विदेशी लूट मिटायेंगे  
देशी कफ़नखसोटों को भी  
लड़कर मार भगायेंगे  
कसम शहीदों की भारत में  
लोक स्वराज बनायेंगे!**

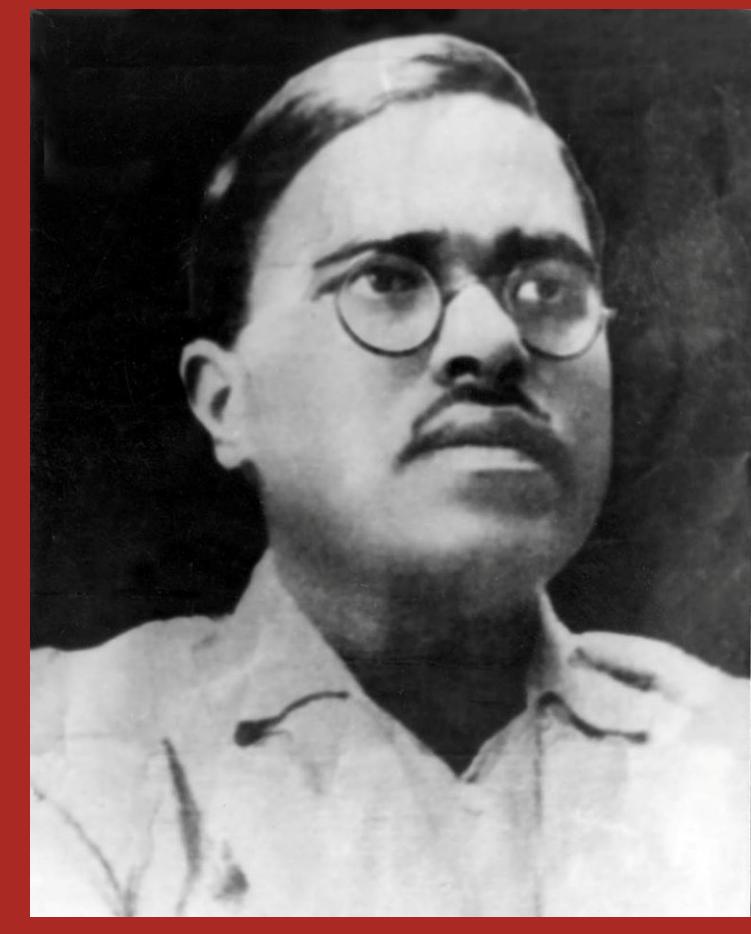
# **ਮਨਤਾਂਸਿੰਹ ਕਾ ਪੈਗਾਮ...**

ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਕੋ ਕ੍ਰਾਨਿਤ ਕਾ ਯਹ ਸਨਦੇਸ਼ ਦੇਸ਼ ਕੇ  
ਕੋਨੇ-ਕੋਨੇ ਤਕ ਪਹੁੰਚਾਨਾ ਹੈ, ਫੈਕਟਰੀ-ਕਾਰਖਾਨਾਂ  
ਕੇ ਥੋੜ੍ਹੋਂ ਮੌਜੂਦਾਂ ਵਿੱਚ ਗੱਲਬਾਂ ਅਤੇ ਗੱਲਬਾਂ  
ਝੋੜਪੜਿਆਂ ਵਿੱਚ ਰਹਿੰਦੇ ਹਨ ਅਤੇ ਇਸ ਕ੍ਰਾਨਿਤ  
ਕੀ ਅਲਖ ਜਗਾਨੀ ਹੈ ਜਿਸਾਂ ਵਿੱਚ ਆਜ਼ਾਦੀ ਆਧੋਗੀ ਅਤੇ  
ਤਥਾਂ ਏਕ ਮਨੁਸ਼ਾਂ ਦੀ ਮਨੁਸ਼ਾਂ ਦੀ ਸ਼ੋ਷ਣ  
ਅਸਮੱਭਵ ਹੋ ਜਾਵੇਗਾ।

**— ਵਿਦਾਰਥੀਓਂ ਕੇ ਨਾਮ ਸਨਦੇਸ਼**

(ਫਾਂਸੀ ਦੇ ਡੇਢ ਮਹੀਨੇ ਪਹਿਲੇ ਪੰਜਾਬ ਛਾਤ੍ਰ ਸੰਘ ਦੇ ਸਮੇਲਨ ਵਿੱਚ ਮੇਂਬਰਾਂ ਦੀ ਸਨਦੇਸ਼)





शहादत थी हमारी इसलिए  
कि आज़ादियों का  
बढ़ता हुआ सफ़ीना  
रुके न एक पल को  
मगर ये क्या?  
ये अँधेरा –  
ये कारवाँ रुका क्यों है?  
बढ़े चलो  
कि अभी तो  
काफ़िला-ए-इंक़लाब को  
आगे, बहुत आगे जाना है!

जब गतिरोध की रिथिति लोगों को अपने  
शिकंजे में जकड़ लेती है तो किसी भी प्रकार  
की तब्दीली से वे हिचकिचाते हैं। इस जड़ता  
और निष्क्रियता को तोड़ने के लिए एक  
क्रान्तिकारी रिपरिट पैदा करने की ज़्रुत  
होती है, अन्यथा पतन और बर्बादी का  
वातावरण छ जाता है। लोगों को गुमराह  
करने वाली प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ जनता  
को ग़्रलत राख्ते पर ले जाने में सफल हो जाती  
हैं। इससे इन्सान की प्रगति रुक जाती है और  
उसमें गतिरोध आ जाता है। इस परिरिथिति  
को बदलने के लिए यह ज़्रुरी है कि क्रान्ति की  
रिपरिट ताज़ा की जाये, ताकि इन्सानियत की  
रुह में हरक़त पैदा हो।

— भगतसिंह



# नौजवान भारत सभा

नौजवान भारत सभा का नाम आप में एक महान क्रान्तिकारी विरासत को पुनर्जागृत करने और आगे बढ़ाने के संकल्प का प्रतीक है। महान युवा विचारक क्रान्तिकारी भगतसिंह ने औपनिवेशिक गुलामी के विरुद्ध भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन को नया वैचारिक आधार देने और नये सिरे से संगठित करने के लिए अपने साथियों के साथ मिलकर 1926 में नौजवान भारत सभा के झण्डे तले नवयुवकों को संगठित करना शुरू किया था। भगतसिंह और उनके साथियों की महान क्रान्तिकारी विरासत से प्रेरणा और शिक्षा लेते हुए हम एक बार फिर नौजवान भारत सभा के ही परचम तले सभी प्रगतिशील और बहादुर युवा स्त्रियों और पुरुषों को संगठित करते हुए एक नयी शुरुआत का संकल्प लेते हैं। इस नौजवान संगठन को एक नयी क्रान्ति के युवा सिपाहियों की भरती और शिक्षण-प्रशिक्षण का केन्द्र बनाना हमारा सर्वोपरि उद्देश्य है।

अगर आप भी भगतसिंह के सपनों को साकार करना चाहते हैं तो नौजवान भारत सभा के सदस्य बनें और भगतसिंह की विरासत के सच्चे वारिस बनें। सदस्य बनने के लिए सम्पर्क : वेबसाइट - <http://naubhas.in>  
फेसबुक पेज - <http://fb.com/naujavanbharatsabha>

# हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- देश-दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- सुबह-सुबह प्रगतिशील कविता, कहानियां, उपन्यास, गीत-संगीत, हर रविवार पुस्तकों की पीडीएफ
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य पीडीएफ व यूनिकोड फॉर्मेट में



मजदूर बिगुल व्हाट्सएप्प चैनल से जुड़ने के लिए अपना नाम और जिला लिखकर इस नम्बर पर भेज दें - **9892808704**

वैकल्पिक नम्बर : **9619039793**

---

फेसबुक पेज : [fb.com/unitingworkingclass](https://www.facebook.com/unitingworkingclass)

---

टेलीग्राम चैनल : [www.t.me/mazdoorbigul](https://t.me/mazdoorbigul)

